M.A,.(Education) Part- ll,Paper- X,
Topic- पर्यावरण से अभिप्राय(concept of Environment)
Presented by Dr.Pallavi

1.1प्रस्तावना (Introduction): "औपचारिक शिक्षा और देश की समृद्ध व विविधता पूर्ण संस्कृति के बीच उत्पन्न दूरी समाप्त होनी चाहिए। आधुनिक तकनीकयो के वशीभूत होकर हमारी पीढ़ियाँ भारत की सांस्कृतिक जड़ों से विलग न हो जाएं।"

"The existing, schism between the formal system of education and country rich and varied cultural traditions, needs to be bridged. The preoccupation with modern technologies should not be allowed to sever new generation roots in indian history and cultural."
-NEP, 1986. p. 21

भारतीय जीवन दर्शन में पर्यावण शुद्धता का विचार स्वाभाविक रूप से पिरोया हुआ है। मनुष्य स्वयं प्रकृति का ही एक अंग है, अकेला मनुष्य इस प्रकृति का स्वामी नहीं। यहाँ समस्त चर-अचर (Biotic-Abiotic) संसार में एक ही समान "ईश्वर-तत्त्व' या 'परम्-चैतन्य' आत्म-तत्व की सर्वत्र व्याप्ति मानी गई हैं। गीता में श्री कृष्ण द्वारा अभिव्यक्त यही एकत्व भाव जड़-चेतन और मानव के बीच समरसता के दर्शन में पर्यावरण संरक्षण का मूल भाव निहित करता है।

सर्व भूतेषु यनैकम भावमव्यय मीक्षते । अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्वि स्त्यकम् ॥

।।-श्रीमद्भागवत् गीता, 18/21

अर्थात् जिसके द्वारा समस्त प्राणियों में एक निर्विकार भाव देखा जाता है तथा विविधता में एकता का दर्शन होता है, वही ज्ञान सच्चा ज्ञान है।

मानव सहित सभी जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, वनस्पति और जड़-त्वों (पृथ्वी, वायु, आकाश, तेज, जल) में गहरा आत्मिक सम्बन्ध है। ये सभी परस्पर एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। मनुष्य इनका स्वामी नहीं, सहोदर है। वह इन्हीं से निर्मित है, इन्हों में विलीन हो जाता है। इस प्रकार पाश्चात्य दर्शन और भारतीय दर्शन में मूल भेद यही है कि अधिकांश पाश्चात्य विचारधाराएं प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देती हैं, जबकि भारतीय विचारधाराएं प्रकृति के साथ सहज समायोजन को जीवन का आधार मानती हैं।

1.2 पर्यावरण से अभिप्राय (Concept of Environment)

पर्यावरण एक अत्यन्त व्यापक प्रत्यय है, जिसके अन्तर्गत हम विभिन्न विषयों का अध्ययन कर सकते हैं। इस विज्ञान की विशेषता का आभास हमें इस तथ्य से लगता है कि सभी जैविक और अजैविक जगत् इसके अध्ययन का विषय हैं। इसके अन्तर्गत जलमण्डल, वायुमण्डल तथा सामाजिक वातावरण का अध्ययन भी किया जाता है। यदि इसी बात को दूसरे शब्दों में ऐसे भी कहा जा सकता है कि, हमारे भू-मण्डल की सतह पर, इसके आसपास व ऊपर के वायुमण्डल पर तथा सतह तल के नीचे पायी जाने वाली लगभग चल एवं अचल, यानि सजीव व निर्जीव वस्तु पर्यावरण के अन्तर्गत अध्ययन का विषय होती हैं। देखा जाये तो जीवधारियों को अनुक्रियाओं को प्रभावित करने वाली समस्त जैविक और अजैविक परिस्थितियाँ पर्यादरण के अध्ययन क्रम के अन्तर्गत आती हैं। ये जैविक और अजैविक परिस्थितियाँ न केवल एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं, अपितु एक-दूसरे पर निर्भर भी रहती हैं।

वास्तव में इन जैविक और अजैविक तत्वों के मध्य एक सतत् क्रिया चलती रहती है, जिसके कारण पर्यावरणीय परिस्थितियों में परिवर्तन होते रहते हैं। इन्हीं परिवर्तनों का सीधा प्रभाव मानव व मानवीय गतिविधियों पर पड़ता रहता है। अतएवं यह कहा जा सकता है कि, पर्यावरण विशाल सीमाओं को समेटे हुए एक वृहत् वैज्ञानिक विषय है, जिसके वास्तव में इन जैविक और अजैविक तत्वों के मध्य एक सतत् क्रिया चलता रहता , परिस्थितियों में परिवर्तन होते रहते हैं। इन्हीं परिवर्तनों का सीधा प्रभाव मानव व मानवीय गतिविधियों पर पड़ता रहता है। अतएव यह कहा जा सकता है कि, पर्यावरण विशाल सीमाओं को समेटे हुए एक वृहत् वैज्ञानिक विपय है, जिसके अन्तर्गत हम विभिन्न तत्व एवं उनकी अन्तक्रियाओं का अध्ययन कर सकते है।

"भूमि के प्राकृतिक संसाधनों, भूमि, वायु, जल, वनस्पति एवं स्वाभाविक पारिस्थितिकी सहित, की वर्तमान और भावी मानव पीढ़ियों के सुदीर्घ हित को ध्यान में रखते हुए सतर्कतापूर्वक नियोजन एवं प्रबंध द्वारा संरक्षा की जानी चाहिए।"

-'मानव पर्यावरण' पर संयुक्त राष्ट्र के घोषित 26 सिद्धांतों में से दूसरा सिद्धान्त
"The natural resources of the earth, including the air, water, land, flora, fauna and natural eco-systems must be safe guarded for the benefit of present and future generations through careful planning or management as appropriate."

1.2.1 पर्यावरण का अर्थ (Meaning of Environment) 'पर्यावरण' शब्द का निर्माण दो शब्दों परि-आवरण से हुआ है इसका शाब्दिक अर्थ है, 'बाहरी आवरण' अर्थात् हमारे चारों ओर जो प्राकृतिक, भौतिक व सामाजिक आवरण है, वही वास्तविक अर्थों में 'पर्यावरण' है। हम अंग्रेजी भाषा में पर्यावरण को Environment कहते हैं। Environment शब्द दो अंग्रेजी शब्द Environ+Ment से मिलकर बना है। यहाँ Environ का अर्थ To encircle, अर्थात् घेरना है तथा Ment का अर्थ ' from all sides, अर्थात् चारों ओर से घेरना है, अत: पर्यावरण अथवा Environment दोनों ही शब्दों का शाब्दिक अर्थ चोरों ओर से घेरना है, अतः पर्यावरण अथवा Environment दोनों ही शब्दों का शाब्दिक अर्थ चोरों ओर घेरने से है, अतः पर्यावरण बाह्य आवरण का धोतक है।

पर्यावरण एक समष्टि है। मानव इस समष्टि का एक अंग है। वह स्वतंत्र नहीं है, वरन् वह अपनी एक महत्त्वपूर्ण एवं उच्च स्थिति रखता है। विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से पर्यावरण की परिभाषाओं को व्यक्त किया है। इन परिभाषाओं का मूल तत्त्व यह है कि पर्यावरण वह परिवृत्ति है, जिससे मानव चारों ओर से घिरा हुआ है तथा जिसके कारण मानव जीवन एवं उसके कार्यकलापों पर प्रभाव पड़ रहा है ।

सोरोकिन के अनुसार, "भौगोलिक पर्यावरण का तात्पर्य ऐसी दशाओं और घटनाओं से है, जिनका अहित्त्व मनुष्य के कार्यों से स्वतंत्र है, जो मानव रचित नहीं हैं तथा बिना मनुष्य के अस्तित्व और कार्यों से प्रभावित हुए स्वतः परिवर्तित होती हैं।"

डी.एच. डेविस के अनुसार, "पर्यावरण का अभिप्राय भूमि या मानव को चारों ओर से घेर उन सभी भौतिक स्वरूपों से है, जिनमें न केवल वह रहता है, बल्कि जिनका प्रभाव उसकी आदतों एवं क्रिसाओं पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। इस प्रकार के स्वरूपों में धरातल, भौतिक एवं प्राकृतिक संसाधन, मिट्टी के प्रकृति, उसको स्थिति, जलवायु, वनस्पति, खनिज सम्पदा, जल-थल का वितरण, पर्वत, मैदान, सूर्यताप आदि, जो भू-मण्डल पर घटित होती है एवं जो मानव को प्रभावित करती हैं।"

ई.जे. रॉस के अनुसार, "पर्यावरण एक बाह्य शक्ति है, जो हमें प्रभावित करती है।"

तांसले के अनुसार, "प्रभावकारी दशाओं का वह सम्पूर्ण योग, जिसमें जीव रहते हैं, वातावरण कहलाता है।"

मैकाइवर के अनुसार, "पृथ्वी का धरातल और उसकी सारी प्राकृतिक दशाएँ प्राकृतिक संसाधन, भूमि, जल, पर्वत, मैदान, खनिज पदार्थ, पौधे, पशु और सम्पूर्ण प्राकृतिक शक्तियों, जो पृथ्वी पर विद्यमान होकर मानव जीवन को प्रभावित करती हैं, भौगोलिक पर्यावरण के अन्तर्गत आती हैं।"

फिटिंग के अनुसार, "जीवों के पारिस्थितिक कारकों का योग पर्यावरण है।"

हर्स कोविट्स के अनुसार, "वातावरण उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है, जो प्राणी के जीवन और विकास पर प्रभाव डालती है ।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि, पर्यावरण वह बाहरी परिवृति अपया परिस्थितियों का सम्मिलित रूप है, जो मनुष्य को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है, अत: उक्त वैज्ञानिकों के विधा से स्पष्ट है कि मनुष्य पृथ्वी पर निवास करता है , जिसे प्राकृतिक तत्वों ने घेर रखा है। ये प्राकृतिक तत्त्व मानव के विभिन्न क्रियाकलापों पर अपना प्रभाव डालते हैं और उनके प्रभाव से मानव के क्रियाकलापों में स्वतः परिवर्तन हो जाता है। आधुनिक मानव इस प्राकृतिक तत्त्वों पर पूर्णतः आधारित अथवा दास तो नहीं है, परन्तु वह इनके प्रभावों से दूर भी नहीं रह सकता । मानव अपनी क्षमतानुसार और समय के अनुसार इन तत्वों को बदलता रहता है। सबसे पहले पर्यावरण का अर्थ प्राकृतिक तत्त्वों की समग्रता (Wholeness) से था, परन्तु जब मानव ने अपनी स्पष्ट छवि अधिवास, सड़क, खेत, उद्योग-धन्धों, व्यापार आदि के रूप में भूमि-सतह पर डाली, तो इसने प्राकृतिक पर्यावरण के साथ सांस्कृतिक पर्यावरण शब्द को भी जोड़ दिया। इन दोनों प्रकार के पर्यावरणों को मिलाकर भौगोलिक पर्यावरण (Geographical Environment) की संज्ञा दी गयी। हम यह भी कह सकते हैं कि, पर्यावरण से आशय उन पर होने वाली परिस्थितियों, प्रभावों और शक्तियों से है, जो सामाजिक और सांस्कृतिक दशाओं के समूह द्वारा व्यक्ति या समुदाय के जीवन को प्रभावित करती हैं ।संक्षेप में, निकटवर्ती परिस्थितियों को पर्यावरण का नाम भी दिया जा सकता है। ये परिस्थितियाँ प्रकृति द्वारा या मनुष्य के द्वारा प्रदान भी हो सकती हैं। पर्यावरण अपने कारकों या तत्वों को प्रभावित करता है और साथ ही स्वयं भी उनसे प्रभावित होता है। पर्यावरण हमें इस बात को समझने की अन्तदृष्टि भी प्रदान करता है कि विश्व किस तरह क्रियाशील है। मनुष्य ने सदैव ही पर्यावरण पर परिवर्तनकारी प्रभाव हो डाले हैं, जो प्राकृतिक तंत्रों के प्रति अनभिज्ञता के कारण अक्सर विनाशकारी सिद्ध हुए हैं।

मानव स्वयं भी पर्यावरण का ही जीव है। जिस प्रकार औषध विज्ञान के मौलिक कार्यों के लिए सामान्य प्राणी विज्ञान का अध्ययन आवश्यक होता है, जिस प्रकार जीवों संबंधी विज्ञान को समझने व जानने हेतु जीव विज्ञान का अध्ययन करना आवश्यक होता है, उसी प्रकार से मानव संबंधों को समझने हेतु पर्यावरण का ज्ञान आवश्यक अन्य प्राणियों के समान ही मनुष्य भी पर्यावरण के भौतिक अभिलक्षणों से प्रभावित होता है। कुछ अर्थों में तो मनुष्य दूसरी जीव-जातियों पर पूर्णतः निर्भर है तथा अपनी ही जाति के अन्य व्यष्टियों से समायोजन बनाने के लिए बाध्य है। मानव अपने प्राकृतिक वातावरण से अपने उद्भव से सामंजस्य अथवा तालमेल करता चला आ रहा है। जब मानव पत्थर युग में था, तब उसे अपनी सभी क्रियाकलापों में पत्थरों पर निर्भर रहना पड़ता था, जैसे पत्थर युग में मानव ने पत्थर के औजारों का निर्माण किया, पशुओं को पालतू बनाकर अपने उपयोग में लिया, अपनी तथा पशुओं की सुरक्षा हेतु घरों का निर्माण किया, प्रकृतिप्रदत्त वस्तुओं, जैसे-सब्जी, फल इत्यादि का भोजन के रूप में उपयोग किया । वर्तमान मानव इन्हीं समायोजनों के ज्ञान के अभाव के कारण पीड़ा भोग रहा है। प्रदूषण में वृद्धि , जनसंख्या में तीव्र बढ़ोतरी तथा अन्य पर्यावरणीय समस्याएँ इसका ही जीता-जागता उदाहरण है, अतः आज के मानव को पर्यावरण का महत्व और उसका मानव के साथ संबंधों का ज्ञान होना नितान्त ही आवश्यक है। मानव ने अपनी सभी क्रियाओं के द्वारा सांस्कृतिक पर्यावरण को विकसित करने के लिए निरन्तर उसमें परिवर्तन लाया है। जब मानव ने पौधों को उगाना सीख लिया, तो वह उपजाऊ मिट्टी वाले क्षेत्र, जैसे-सिन्धु गंगा मैदान, नील घाटी मेसोपोटामि आदि में स्थाई रूप से निवास करके खेती कर अपनी जीविका चलाने लगा। कालान्तर में वाढ़ नियंत्रण एवं सिचाई से संबंधित प्राविधिकी (Technology) का उपयोग कृषि की एक गहन प्रक्रिया बन गया, जिसके

परिणामस्वरूप इससे अधिक भरण-पोषण की क्षमता उस क्षेत्र को प्राप्त हुई और वहाँ जनसंख्या में काफी वृद्धि हुई, अतः ग्राम कृषि संस्कृति का विकास हुआ, जो आज भी प्रचलित है, क्योंकि भारतवर्ष में यदि देखा जाए, तो यह कहा है कि, भारत एक कृषि प्रधान देश है, क्योंकि भारतवर्ष की कुल जनसंख्या का 70 प्रतिशत भाग तो केवल गांवो में ही निवास करता है। कृषि से संबंधित प्राविधिकी में निरन्तर विकास के कारण ग्रामीण कृषि संस्कृति में सूक्ष्म परिवर्तन हुए (खादों एवं उर्वरकों का प्रयोग, ट्रैक्टर, हारवेस्टर आदि उपकरणों के प्रयोग द्वारा)। इन परिवर्तनो ने ग्रामीण कृषि संस्कृति को एक औद्योगिक संस्कृति में बदल कर रख दिया है, साथ ही समाज में एक नवीन का जन्म हुआ, जिसे हम 'नव अभिजात्य कृषक वर्ग' यानि Neo-Gentlemen Farming Class कह सकते हैं । अत: पर्यावरण से तालमेल अथवा समायोजन का ज्ञान होना आवश्यक है। मानव अपने विचारों के अनुसार विभिन्न है। निवास करता है। कृषि से संबंधित प्राविधिकी में निरन्ता विकाम के कारण ग्रामीण कृषि में मानव अपने विचारों के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित करता है।

1.2.2 मानव एवं पर्यावरण के मध्य विचार संबंध (Relations between Human & Environment)

मानव एवं पर्यावरण के मध्य विचार संबंध मानव के विचारों, धार्मिक भावनाओं, कला, संगीत, रुचि आदि कारण परिलक्षित होते हैं। उदाहरण के रूप में-भारत प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का देश है, जिसके विकास में यहाँ का भौगोलिक पर्यावरण सहायक रहा है। यहाँ की संस्कृति में जल, वायु, सूर्य, वृक्ष, भूमि, नदियाँ आदि को देवतास्वरूप मानकर उन्हें पूजा जाता रहा। इसके पीछे मानव की धार्मिक भावना रही, परन्तु यह पर्यावरण चेतना का धोतक है तथा उसके संरक्षण के प्रति दृष्टिकोण का भी प्रतीक है, इसी कारण भारतीय संस्कृति पर्यावरण के साथ सन्तुलन बनाकर पुष्पित और पल्लवित हुई। मानव के विचारों, धार्मिक भावना आदि को पर्यावरण के साथ सन्तुलित बनाने के लिए पर्यावरण का ज्ञान आवश्यक है।

पर्यावरणीय संबंधों को दूर अवस्था तक लाने वाली शक्तियाँ अपरिचित नहीं हैं। जब से मानव जीव जगत् की प्रमुख जाति के पद पर पहुँचा तथा उसने अपनी स्वेच्छा से पारिस्थितिक तंत्र के निर्माण तथा उसमें फेर-बदल को शक्ति प्राप्त की, तब हो से ये शक्तियाँ धीरे-धीरे संचित होती रही हैं। जैसे विजली-पानी की शक्ति को जब से इकट्ठा किया जाने लगा है, तब से इनका इस्तेमाल भी सही जगह पर तथा सही समय पर हाने लगा है। तकनीकी प्रगति में मानव सभ्यता इतनी अधिक व्यस्त रही है कि उसे इस तरफ ध्यान देने अथवा मूल्यांकन करने का समय हो नहीं मिला और यदि समय मिला, तो भी उसने इस तरफ पूरा जागरुक होकर सक्रीय रूप से इसमें हिस्सा नहीं लिया, परिणामस्वरूप विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं ने अपना उग्र रूप धारण कर लिया।

प्रारम्भ में आदि मानव अन्य प्राणियों के समान ही अपने पर्यावरण के साथ समायोजन कर अपना अस्तित्व बनाये रखने वाली मात्र एक अन्य जातिभर था । उसमें कुछ ही ऐसे लक्षण थे, जो अन्य प्राणियों में नहीं थे आधुनिक मानव का स्वयं की अद्वितीयता का दावा भी सिर्फ उसके अत्यधिक विकसित एवं विशेषीकृत मस्तिष्क पर ही आधारित है। आदि मानव जैविक समुदाय का एक सदस्य था तथा इसके अन्तर्गत समन्वित जीवन बीता रहा था। प्रकृति के इस सन्तुलन को उसने जैसा पाया, उसी के अनुसार उसने स्वयं को समायोजित कर लिया तथा उसमें परिवर्तन का अधिक प्रयास नहीं किया ।

परन्तु पिछले 100 वर्षों में मानव ने आर्थिक, भौतिक तथा सामाजिक जीवन के प्रत्येक पक्ष में प्रगति के लम्ये लम्बे कदम भरे हैं। उसका इन क्षेत्रों के विकास का मात्र एक उद्देश्य था, वह यह कि इससे उसका स्वयं का कल्याण हो और उसने इनके सम्पूर्ण पर्यावरण पर समाघातिक प्रभावों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। कृषि में उसने केवल उन्हीं फसलों का चयन किया, जिन्हें वह पसन्द करता था, जिससे उसे कुछ लाभ होता हो तथा दूसरी को समाप्त किया। औषधियों के प्रयोगों में इसका उद्देश्य संक्रामण, परजीवी तथा आहार संबंधी पेटे के रोगों, मानसिक विकारों, अपहासक विकारों, शारीरिक विकारों अथवा अन्य रोगों को नियंत्रित करने तक ही सीमित बनाया। इसमे उसको सफलता मिली, जिसके परिणामस्वरूप उसने अपनी आबादी में अत्यधिक वृद्धि कर ली। उसने प्रौद्योगिक के क्षेत्र में चमत्कारिक प्रयोग करके अपनी सम्पदा को बढ़ाया और अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाया। इस कार मानव की इस धारणा को काफी प्रोत्साहन मिला कि प्रौद्योगिकी में सदैव भलाई निहित रहती है।

तथापि अब अनुभव किया जाने लगा है कि इस प्रगति का मूल्य हमने पर्यावरण की वृहद् समस्याएँ, जैसे-वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई, अर्थात् वनोन्मूलन (Deforestation), बड़े बाँधों की त्रासदी, वायुमण्डलीय प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायू प्रदूप अकाल एवं बाढ़, मरूस्थलीकरण आदि उत्पन्न करके चुकाया है, जो कि जल प्रदूषण, धुएँ द्वारा प्रदूषण, घटते जीवन पर्यावरण के पेस्टनाशियों द्वारा विषकरण, विकिरण के जैवीय दुष्प्रभावों, अस्थिर पारिस्थितिक तंत्रों, प्राकृतिक
सम्पदा के दुरूपयोग, जनसंख्या में असामान्य वृद्धि, लोगों की छोटे-छोटे क्षेत्रों में बढ़ती भीड़ के रूप में परिलक्षित होती है।

उपर्युक्त सभी कारणों से मनुष्य को प्रकृति के प्रति तिरस्कार का परिणाम भी भुगतना पड़ा है। पर्यावरण से स्वतंत्र होने के प्रयास में मानव पर्यावरण पर अधिकाधिक निर्भर होता जा रहा है इन सबके कारण ही आज इस बात की प्रबल आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है कि किस कारण से यह संतुलन संतुलित नहीं रहा है व किस प्रकार से इस प्रकृति का उपयुक्त संतुलन पुनः प्राप्त किया जा सकता है। अब हमें अपने तकनीकी कौशल का उपयोग अपने खोये हुए पर्यावरण को पुनः प्राप्त करने के तरीकों में करना होगा इसी कारण पर्यावरणीय शिक्षा पारिस्थिति अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। आज प्रत्येक देश अपनी शिक्षा पद्धति में पर्यावरणीय अध्यय तथा पर्यावरणीय शिक्षा को स्थान प्रदान करने के लिए कदम उठा रहा है। स्वनिर्मित इस सांस्कृतिक तथा भौतिक पर्यावरण में अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए हमें अब कुछ संकल्पनाओं तथा विधियों का विकास कर होगा, जिससे कि पर्यावरण के सभी पक्षों का प्रायोगिक तथा मात्रात्मक स्तर पर अध्ययन किया जा सके तथा मानव पर्यावरण के संरक्षण की दिशा में उचित कदम उठाये जा सकें।

डॉ. रघुवंशी के अनुसार, "पर्यावरण का नाम आते ही भूपटल के वृहद् पक्षों-मिट्टी, जल, पहाड़, मरूस्थल आदि कल्पना मन में आ जाती है। पर्यावरण के इन प्रकारों की ओर भी अधिक सटीक अभिव्यक्ति भौतिक प्रभावों-नमी, पदार्थों के गठन आदि की विभिन्नताओं तथा जैवीय प्रभावों के रूप में की जा सकती है। मुद्रा तथा चट्टानों के समान दूसरे जीव भी पर्यावरण के ही अंग हैं । इस प्रकार प्रकृति में जो कुछ भी हमें दिखाई देता है-वायु, जल, मुद्रा, पादप प्राणी, सभी सम्मिलित रूप में पर्यावरण की रचना करते हैं ।"
ए .जी.तासले के अनुसार, "प्रभावी दशाओं का सम्पूर्ण योग, जिसमें जीव रहता है, पर्यावरण कहलाता है ।"
इस प्रकार, पर्यावरण उन सभी बाह्य दशाओं एवं प्रभावों का योग है, जो जीव के जीवन तथा विकास पर अपना प्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं ।
1.3 सारांश (summary):हमारे चारों ओर जिस भौतिक परिवेश का आवरण है ।यानी जिस हवा, पानी में हम साँस लेते हैं, उसे पर्यावरण कहते हैं । विभिन्न विद्वानों ने इस संबंध में अपने-अपने मत दिए हैं ।जिससे इसे भली भांति समझने में आसानी हुई ।